बाबूलाल तेली की नाक

स्वयं प्रकाश

एक दिन एक अतिमहान देश के एक अतिसामान्य नागरिक श्री बाबूलाल तेली के साथ एक अजीब-सा हादसा हो गया। हुआ यह कि एक बलिष्ठ व्यक्ति ने बाबूलाल तेली की नाक पर खामखाँ एक जोरदार घूँसा जड़ दिया। बाबूलाल तेली उस व्यक्ति का जानते तक नहीं थे। यही उनके पिटने का कारण बना। बलिष्ठ व्यक्ति बीच सड़क पर एक टूटे-फूटे से अधेड़ आदमी को निर्दयता से पीट रहा था और भीड़ चुपचाप तमाशा देख रही थीं बाबूलाल तेली के मुँह से 'अरे-अरे' निकल गया और बस, बलिष्ठ व्यक्ति ने उनकी नाक पर ज़ोरदार घूँसा जड़ दिया। बलिष्ठ व्यक्ति सोचता था, बाबूलाल तेली जैसे हर व्यक्ति को उसे जानना चाहिए और उससे डरना भी चाहिए। बाबूलाल तेली को बलिष्ठ व्यक्ति को इस महत्वाकांक्षा की ज़रा भी खबर होती तो उसे जानते ही नहीं, उससे डरने में भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती जहाँ इसने लोगों से डर रहे हैं, एक इनसे भी डर लेंगे, क्या फर्क पड़ता है। किसी को इसी में खुशी मिलती है तो अपना क्या जाता है।

बाबूलाल तेली की नाक पर ज़ोरदार घूँसा जड़ने के बाद बलिष्ठ व्यक्ति अपने रास्ते चला गया। झगड़े की कोई गुंजाइश बनी ही नहीं। बनती भी तो बाबूलाल तेली क्या लड़ते। उन्होंने सोचा शुक्र है उनकी गर्दन ही नहीं दबा दी गई। शुक्र है एक घूँसे में ही बात खत्म हो गई। शुक्र है...।

लेकिन उनकी नाक से खून बह रहा था। कमीज़ खराब हो रही थीं कमीज़ खराब होते देखकर कमजोरी-सी महसूस होने लगी टाँगें काँपने लगीं। पीड़ा और जलन की लहरें नाक से खोपड़ी तक दौड़ने लगीं। तमाम कोशिशों के बावजूद जब खून बंद नहीं हुआ तो हारकर बाबूलाल तेली ने सोचा-अस्पताल जाना ही पड़ेगा।

सामने ही एक विशाल और शानदार अस्पताल था जो एक बड़े सेठ ने अपनी दिवंगत सेठानी की याद में बनवाया था। लिखा न होता अस्पताल तो वह पाँच सितारा होटल लगता। बाबूलाल तेली शहर के एक सामान्य-से कार्यालय में एक सामान्य-से क्लर्क थे और मज़ाक की भाषा में कहा जाए तो यह अस्पताल उनके स्टैंडर्ड का नहीं था। पर इस समय अपने स्टैंडर्ड का अस्पताल ढूँढ़ने निकलना भी आसान नहीं था। वह पता नहीं कितनी दूर हो और इसी स्थिति में टैंपो-रिक्शावाले भी पता नहीं उन्हें बैठाएँ या नहीं। बाबूलाल तेली कोई पाँच मिनट तक असमंजस में पड़े रहे, फिर सोचा मुझे कौन सा ऑपरेशन करवाना है, मरहम-पट्टी ही तो करनी है, दस-बीस रुपए

लग भी गए तो क्या हो गया? वैसे भी कभी अपने पर कुछ खर्च करता नहीं। गन्ने का रस तक नहीं पीता। चलो चलते हैं, जो होगी देखी जाएगीं तो बाबूलाल तेली रूमाल से नाक पकड़े-पकड़े रिसेप्शन पर पहुँचे। रिसेप्शन पर कुछ टेलीफोन, एक कंप्यूटर और एक सुंदर-सी लड़की एक साथ कार्यरत थे।

बाबूलाल तेली की सारी बात धैर्यपूर्वक सुनने के बाद, और इस निमित्त बाबूलाल तेली के मन में अपार कृतज्ञता उपजाने के उपरांत लड़की ने मासूम परेशानी से पूछा-इज़ इट इमरजेंसी?

-मैं नहीं जानता। बाबूलाल तेली ने जवाब दिया।

लड़की ने कृपापूर्वक स्वविवेक का प्रयोग किया, एक पर्ची काटकर दी और बोली-पाँचवाँ माला।

बाबूलाल तेली लिफ्ट की लाइन में खड़े हो गए।

पाँचवें माले पर इमरजेंसी थी। इमरजेंसी ज़मीनी माले पर भी थी, पर वह इमरजेंसी मरा चाहने वाले मरीजों के लिए थी, यह हमरजेंसी जिया चाहने वाले मरीजों के लिए।

पाँचवे माले के इमरजेंसी वालों ने दूर से ही बाबूलाल तेली को देखकर कहा- 'आठवाँ माला।' जैसे हकाल रहे हों।

आठवें माले पर ईएनटी इनडोर था। उन्होंने बाबूलाल तेली को सुनकर कहा- 'चैथा माला।'

चैथे माले पर ईएनटी आउटडोर था। उन्होंने बाबूलाल तेली को सूँघकर कहा- 'सातवाँ माला।'

सातवें माले पर विशेषज्ञ था। उसने बाबूलाल तेली की नाक की सफाई करवाई और बोला- मैं नाक विशेषज्ञ हूँ। लेकिन मैं दाहिने नथुने का विशेषज्ञ हूँ। आपकी चोट बाएँ नथुने में हैं। बाएँ नथुने के जो विशेषज्ञ हैं वे विकासशील देशों के नाक संबंधी रोगों पर आयोजित एक सेमीनार में भाग लेने अमेरिका गए हैं। परसों तक आ जाएँगे। बेहतर है आप पल्लेरोज़ आ जाएँ।

-पल्लेरोज़ फिर आना पड़ेगा? बाबूलाल तेली ने पूछा। वह इसके लिए तैयार नहीं थे।